अंजोरिया

भोजपुरी के इण्टरनेट पत्रिका आसाढ़ अंजोरिया 2061 वि. / जून 2004 ई.

एह अंक में :

सम्पादकीय के बहाने	डा.राजेन्द्र भारती	2
गाँव जब सहरा गईल	डा.जनार्दन राय	2
बाबू पेट के करनवें	त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम'	3
रोपनी गीत	सुरेश काँटक	3
दलाल	हीरा प्रसाद ठाकुर	4
टूटलऽ पलानी बा	शिवपूजन लाल विद्यार्थी	4
कूटनीति	चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह	5
हिन्दुस्तानी हालचाल	बर्बरीक	6

अंजोरिया

भोजपुरी के इण्टरनेट पत्रिका आसाढ़ अंजोरिया 2061 वि. / जून 2004 ई.

सम्पादकीय के बहाने

डा.राजेन्द्र भारती

चौदहवीं लोकसभा के शपथ ग्रहण के समय बिहार के राजग सांसद प्रभुनाथ सिंह एगो आवाज उठवनी कि 'हम भोजपुरी में शपथ ग्रहण करब'।

चूकि भोजपुरी अभी तकले संविधान के आठवीं सूची में शामिल नइखे हो पावल, एहकर मान्यता नइखे मिलल एहसे उहाँके भोजपंरी में शपथ ग्रहण करे के अनुमति ना मिलल। बाकिर तबहियों एगो फायदा ई भइल कि मीडिया में ई बात आइल आ आउरियो भासा वाला लोग एह बात के जानल। एह प्रयास खातिर पूरा भोजपुरी समाज सिंहजी के साधुवाद देत बा आ धन्यवाद देत बा कि भारत के संसद में भोजपुरी के बात उठल तऽ सही। हमनी का इहो उम्मेद करत बानी जा कि आगे भी जब जब मौका मिली सिंहजी संसद में भोजपुरी के सवाल उठावल करब। उहाँके इहो कांशिश करे के चाहीं कि भोजपुरी क्षेत्र के सांसद लोग के एकजुट करके दलगत राजनीति से उपर उठके भोजपुरी के मान्यता के बात होखो।

अंजोरिया अगला महीना आपन पहिलका साल पूरा करे जा रहल बा। सभे सुधि पाठक, लेखक लोग से निहोरा बा कि आपन बेबाक प्रतिक्रिया भेजीं सभे। रचनिहार लोग से निहोरा बा कि इण्टरनेटी प्रकृति के खेयाल रखत छोट छोट रचना भेजीं।

अंजोरया इण्टरनेट के माध्यम से भोजपुरी आ भोजपुरी साहित्य के देश विदेश के हर कोना में पंहुचावल चाहत बा। आ एहमें सभकर सहयोग चाहत बा।

कदम चौराहा, बलिया 277 001

कविता

गाँव जब सहरा गईल

डा.जनार्दन राय

तार जब टूटल हिया के, टीस मन में रहि गईल।
हो गईल आपन पराया, गाँव जब सहरा गईल।

मोह बा भउजी ना भईया के, न कवनो गीत के,
दरद पंझरिया पलनिया में, अकेले रहि गईल।

ताल बा तलवा तलइया, जल जलाजल हो गईल,
बाढ़ में आईल जवन बुड्डुवा, ऊ खइनी दे गईल।

देति बा गारी रमयना के, रमवती इयाद बाऽ,
का कहीं, जगुवा जुआड़ी के कहानी रहि गईल।

मान मरदन के जवन कइलसि महजनी मरि गईल,
जरि गईल सम्मत सधुइया के, पलानी बंचि गईल।

भागि से बांचल भभीखन के कुटी, किछु याद बाऽ,
गाँज में गाँजा रहल, रावन हिया में रहि गईल।

आस में चलल अकासे में सतहवा रहि गईल,
ज्ञान गंगा में रहल मोती जवन ऊ का भईल?

मोह बा एकर न तिरिया का तनय का बाति के,
दरद बा दिल में सपुरनी फेर कुवाँरे रहि गईल।

अंजोरिया

भोजपुरी के इण्टरनेट पत्रिका आसाढ़ अंजोरिया 2061 वि. / जून 2004 ई.

गीत

बाबू पेट के करनवें

त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम'

करीलें तोहार दरवनिया हो, बाबू पेट के करनवें।

भुखिया से बिलखेला गोदी के गदेलवा,
दूधवा दूलम, कबो नाहीं लागे तेलवा,
पनिया भरेली बालि धनिया हो, बाबू पेट के करनवें।

घलुवा में बड़का करेला गरुवारी,
ऊपरा से पावे रोज लात मुका गारी,
नाहीं चिन्हे कपिया कलमिया हो, बाबू पेट के करनवें।

बिटिया सयान भईल भँईसी चरावे,
मकई के खेतवा में गुदी हुलुकावे,
गोबरा काछेले रजमुनिया हो, बाबू पेट के करनवें।

बाड़ी अलचार हो, बेमार महतरिया,
बूढ़ बाड़े बपऊ, अगोरेले दुअरिया,
टुकुर टुकुर ताकेले चुहनिया हो, बाबू पेट के करनवें।

सुनीलें सुराज भईल देशवा में सगरी,
मोरा लेखे रामराज बिपति के गठरी,
करजे दबाईल जिनगनिया हो, बाबू पेट के करनवें।

शारदा सदन, कृष्णानगर, बलिया 277 001

गीत

रोपनी गीत

सुरेश काँटक

बदरा देखिके हुलसि जाली रोपनी,
बिहँसेला खेतवा रोपेली धान रोपनी।

छप छप पनिया में गोरिया आ जनिया,
जइसे बजावे घुंघुर पैजनिया,
रंग रंग सड़िया चमकि जाली रोपनी।

पूरुवा के झोंकवा अँचरवा हटावे,
रक् झक् जइसे देवरवा सतावे,
बचिके बचाके लचकि जाली रोपनी।

पँजरे किसनवा के हथवा कुदरिया,
गोंहट सजावेले काटि काटि अरिया,
पँकिया उड़ाके झमकि जाली रोपनी।

हँसि आ मजाक गीत बुढ़िया बिटुईया,
टुभुकेली चहकेली बोलि बोलि बोलिया,
जोंकवन के देखले हड़कि जाली रोपनी।

काँट, ब्रह्मपुर, बक्सर 802 112

अंजोरिया

भोजपुरी के इण्टरनेट पत्रिका आसाढ़ अंजोरिया 2061 वि. / जून 2004 ई.

कविता

दलाल

हीरा प्रसाद ठाकुर

जीअत रहऽ बाबू मोर, चानी तू काटत रहऽ,
सोना के छनवटा से छनऽ छनऽ दागत रहऽ।

देह बड्डुये हीरा अस, बोली बा खीरा अस,
बहतर पर दिया बरे मने मने गाजत रहऽ।

तोहरा दलाली से नवका बिहान भईल,
रहे के मवस्सर ना, बड़का मकान भईल।

झुलुनी गढ़ावत रहऽ, अँचरा जुड़ावत रहऽ,
भाव देके मिसरी अस झण्डा फहरावत रहऽ।

केतना के डाँड़ टूटल, केतना के गाँव छूटल,
नोकरी के लालच देके, बाति से पोल्हावत रहऽ।

खंखोरत ख हीक जागे, नचोरत खा नीक लागे,
नोकरी देलऽ अस तस, लोग के भरमावत रहऽ।

पइसा के लर लागी, गाटर से घर जागी,
आपन कमाई बूझि, कढ़ई अस हींड़त रहऽ।

मँगला प झनकेलऽ, नाग अस फनकेलऽ,
सेर उपर सवा सेर बा, ऐकरो के गिनत रहऽ।

झुलनी चमकि उठी, बेसर गमकि उठी,
कइसे दलाली होला हीरो के सिखावत रहऽ।

आर. एम. एस., आरा।

गीत

टूटलऽ पलानी बा

शिवपूजन लाल विद्यार्थी

गली कूंची, घर आंगन, भइल पानी पानी बा,
आइल बरसात पिया, टूटलऽ पलानी बा।

गरजेला मेघा अरु कड़के बिजुरिया,
बड़ा भकसावन लागे रतिया अन्हरिया।
अँखिया अस टप टप चुअत ओरियानी बा,
आइल बरसात पिया, टूटलऽ पलानी बा।

बरऽखता पानी जब मिलेना सरनवाँ,
रेंगऽताटे साँप गोजर घरवा अँगनवा।
दूर बाड़ऽतू का जानऽ, कवन परेसानी बा?
आइल बरसात पिया, टूटलऽ पलानी बा।

कइसे छवाँई घर, पईसा ना कउरी?
कवन अधामत करीं, कहां कहां दउरीं?
दुखवा अभाव बनल जिनिगी कहानी बा,
आइल बरसात पिया, टूटलऽ पलानी बा।

सखिया सहेली सब गावेली कजरिया,
झुलुवा लागलऽ बाटे, अमवा के डरिया,
जेकर पिया साथे ओकर चानी बस चानी बा,
आइल बरसात पिया, टूटलऽ पलानी बा।

बेंगवा के टरऽ टरऽ जियरा डेरावेला,
पपीहा के पीहू पीहू निंदिया उड़ावेला,
बरऽसता सावन, हम्मर तरसत जवानी बा,
आइल बरसात पिया, टूटलऽ पलानी बा।

लहऽलहऽ चहऽचहऽ लागे फूल बगिया,
गछवा बिरिछिया के सँवरल जिनिगिया,
हमरा जिनिगिया में पसरल बीरानी बा,
आइल बरसात पिया, टूटलऽ पलानी बा।

प्रकाशपुरी, आरा।

लघुकथा

कूटनीति

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

'आरे सुनात नईखेऽ ? ओने कवन पानी पी रहल बा ?' - पानी पिये झरना के माथा पर आइल बाघ के दहाड़ हवा, जंगल, पहाड़ के छाती दहलावे लागल।

'हम हईं।' - नया नया चुनाइल जंगल के मुखिया के आवाज उभरल। गैर शिकारी जानवरन के वोट अधिका रहला से मुखिया के वोट में मेमना चुनाइल रहे।

'तू हवऽ त काऽ ? अब हमरा तहार जूठ पानीओ पीए के पड़ी का ? - बाघ के आवाज तनी नजदीक आवत बुझाइल।

'हम तऽ नीचे बानीं। पानी उपर से आवत बा। जूठ कइसे हो गइल ?' मुखिया समुझावे के कोशिश कइलन।

'अण्डा सिखावे बच्चा के कि चेंव चेंव मत करऽ। मुखिया हो गइलऽ आ तहरा इहो मालूम नइखे कि पानी आकास पर जाये के पहिले कहां रहेला ?' - मुखिया के सामने झाड़ी से निकलत बाघ के आवाज में पहिले वालह कड़क ना रहे।

'मुर्गी पहिले भइल कि अण्डा' ई समुझावल तऽ मुश्किल बा बाकिर देखल जाव तऽ पानी उपर से नीचे गिरत बा।' - बाघ के नरमी के भाँपत वजनदार तर्क देके मुखिया मनहीं मन आपन पीठ ठोकलें।

'अच्छा भाई, तोहरे जीत भईल। हमहीं गलती पर रहीं। देखऽ कान धरत बानीं।' - बाघ धीरे धीरे बढ़त आपन कान धइले रहे।

'तू नेता हवऽ। तोहरा समय के कीमत बा। तोहार समय बरबाद कइनी। माफ करऽ।' - बाघ अब मुखिया के लगे आ गइल रहे। आ जबले मुखिया सम्हरस तबले उनुका के अपना जबड़ा में जाँत के बाघ फेरु झुरमुट में घुस गईल।

नोनार, पीरो, भोजपुर 802 207

अंजोरिया

भोजपुरी के इण्टरनेट पत्रिका | आसाढ़ अंजोरिया 2061 वि. / जून 2004 ई.

सामयिकी

हिन्दुस्तानी हालचाल

बर्बरीक

चुनाव 2004 हो गइल। जवन केहू का दिमाग में ना रहे ओइसनका रिजल्ट आइल। सब प्रीपोल, पोस्टपोल, एक्झिट वेक्झिट पोल पोलमपोल साबित भइल। नेहरु के नम्बरो बेनम्बर होके रहि गइल।

कांग्रेस सबले बड़हन पार्टी बन के उभरल। भाजपा दू नम्बर पर। कांग्रेस के 145 के सोझा भाजपा के 138 सांसद। कांग्रेस गठबन्धन के 217 सांसद तऽ राजग के 186। वामपंथ के भागे छींका टूट गईल। मैण्डेट के नयका नयका परिभासा खेजइली सन। कहाइल कि ई सेकूलर जमात खातिर मिलल भोट हऽ, आर्थिक सुधार के खिलाफ भोट हऽ।

सोनिया गाँधी कांग्रेस के नेता चुनइली। प्रसिडेण्ट के सोझा गइली। बाकिर आपन दावा पेश ना कइली। कहली कि हम प्रधानमन्त्री ना बनम। सगरे लोग समुझावल बाकिर ऊ ना मनली। तेयाग के मुर्ति बनिके ऊ अपना बदला मनमोहन सिंह के प्रधानमन्त्री बनवा दिहली।

ओकरा बाद चार पांच दिन ले खूब नउटंकी भइल। केहू के रेल केहू के खेल। हारल पाटिल के होम मिनिस्टरी। सोमनाथ चटर्जी के लोकसभा अध्यक्ष पद। बिना बोलवले भोज में पंहुचल अमर सिंह के बेइज्जती। बाकिर तबहूं सेकुलर का नाम पर सास्टांग दण्डवत। रामविलास रेल ना त शपथ ना का नारा के महटिआ के खाद मन्त्री बन गइलन।

भाजपा के तऽ सब नउटंकिये निकल गइल। सुसमा स्वराज आ गोविन्दाचार्य के सब पलान पलाने रहि गइल। सोनिया प्रधानमन्त्री बनती तऽ ऊ लोग आपन आपन तमाशा करीत लोग। भाजपा के दोसरका बड़हन मुद्दा ओकरा हाथे आवत आवत रहि गइल। अयोध्या के विवादित ढाँचा गिरवला का बाद ओह लोग का हाथ से राममन्दिर मुद्दा तऽ पहिलहीं निकल गइल रहे आ अब ई विदेशी के मुद्दा भी छटक गइल। अब ऊ लोग परेशान बा कि कवन मुद्दा उठावल जाव।

बाकिर बर्बरीक ई बाति बढ़िया से जानत बाड़न कि ऊ लोग ‘फ्रेण्डली मैच खेले में माहिर हऽ। कवनो ना कवनो जोगाड़ लगाईये लीहि लोग।

बर्बरीक के दोसरका डर बा कि कहीं कांग्रेस आपन चुनावी वादा मत निभावे लागे। चुनाव में ओकर वादा फेर पुरनका दिन लउटावे के रहे। कवन आ केतना पुरनका? जब अस्सी रुपया में एचएमटी घड़ी खरीदे खातिर लोग दू दू दिन लाइन में सूतत रहे? गैस के कनेक्शन खातिर बड़का बड़का पैरवी खोजे के पड़त रहे? स्कूटर खरीदे खातिर चार चार साल के लाइन रहत रहे? भगवान ओह लोग के सद्बुद्धि देस आ चुनावी वादा भुलवा देस। एही में देश के कल्याण बा। ना तऽ दूइये दिन में वर्द्धन जी के एगो बयान पर पूंजी बाजार के तीन लाख करोड़ रुपिया तऽ डूबिये गइल।

आगे आगे देखत रहीं, का होखत बा?

जगदीशपुर, बलिया 277001